आला हज़रत इमाम-ए-अहले सुन्नत
इमाम अहमद रज़ा
रदियल्लाहो तआला अन्हो

الصلوٰۃ والسلام علیک یا رسول اللہ

गैज़ से जल जाएं बे दीनों के दिल ।
या रसूल अल्लाह की कसरत कीजिए ।

बैठते उठते मदद के वास्ते ।
या रसूल अल्लाह कहा फिर तुझको क्या ।

फ़रयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में ।
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो ।

या रसूल अल्लाह कहने के सुबूत में

अनवारुल इन्तेबाह

फी हल्ले

निदा-ए-या रसूल अल्लाह

तसनीफ

मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत अश्शाह इमाम अहमद रजा खाँ
बरेलवी

-: बफ़ैज़ :-

हुज़ूर मुफ्तिए अअ्ज़म हज़रत अल्लामा शाह
मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा क़ादिरी नूरी (अलैहिर्रहमा)

इमाम अहमद रज़ा

एक तआरुफ

अज़ :- सैय्यद अज़ीमुद्दीन रिज़वी
सदर अंजुमन-ए-ग़ौसिया रिज़वीया

मुजद्दिदे आज़म हुज़ूर सैय्यदना आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ फाज़िले बरेलवी रदीअल्लाहो तआला अन्हो, की विलादते बासआदत १० शव्वाल १२७२ हिजरी मुताबिक १४ जून १८५६ ईसवी को बरेली शरीफ में हुई । आप का इसमे शरीफ (नाम) "मुहम्मद" रखा गया। जद्देअमजद (दादा) मौलाना रज़ा अली खाँ अलैहरहमा, ने आप का नाम "अहमद रज़ा" फरमाया। खुदावन्दे करीम ने आप को गैर मामूली कुव्वतो का मालिक बनाया था। चुनानचे आप ने सिर्फ चार (४) साल की उमर मे कुरआने करीम खत्म कर लिया-छे (६) साल की उमर में ईद मीलादुन्नबी के मौके पर बहुत बड़े मजमे के सामने लगातार दो घंटे तकरीर फरमाई। आंठ (८) साल की उमर मे दरसी किताब هداية النحو (हिदायतुलनहव) की शरहे लिखी जो आप की सब से पहली किताब है। दस (१०) साल की उमर में दर्स की मशहूर किताब مسلم الثبوت (मुस्लिमुस्सुबूत) पर हाशिया लिखा। शाबान १२८६ हिजरी में जब के आप की उमर सिर्फ १३ साल १० माह ५ दिन थी आप को दस्तारे फज़ीलत से नवाज़ा गया। आप फरमाते है के जिस दिन मैं फारिग हुआ (यानी मुकम्मल आलिम हुआ व दस्तारे फज़ीलत से नवाज़ा गया) उसी दिन मुझ पर नमाज़ फर्ज़ हुई। १३ साल की उमर में ही एक अहेम मस्अले का जवाब लिख कर वालिदे माजिद मौलाना नकी अली खाँ अलैहरहमा, की खिदमत मे पेश किया जो बिल्कुल सही था। वालिद साहब ने उसी दिन से फतवा नवेसी का काम आप के सुपूर्द कर दिया।

१२९४ हिजरी मे आप ने मारहेरह शरीफ मे सैय्यद आले रसूल अहमदी कुद्देसा सिर्रहु, के मुबारक हाथो पर बय्अत की और उन की बारगाह से खिलाफत व इजाज़त के साथ साथ सनदे हदीस से भी मुशर्रफ हुए !

पीरो मुरशिद हज़रत सैय्यद शाह आले रसूल अलैह रहमा, फरमाया करते थे के "अगर कयामत में खुदा-ए-जुलजलाल ने सवाल फरमाया के अए

आले रसूल, तू दुनिया से क्या लाया ? तो मैं अहमद रज़ा को पेश कर दुंगा" सुबहानल्लाह ! यह कैसा मुरीद है जिस पर उस के मुरशिद को भी नाज़ है।

आप ने मुख्तलिफ उलूम व फुनून (Arts and Sciences) मे तेरा सौ (१३००) किताबे लिखी जो दुनिया की तकरीबन ५२ जबानो मे है ज़्यादा तर किताबे, अरबी व फ़ारसी में है। इन किताबो मे "फतावा-ए-रिज़वीय" बहुत ही मशहूर व मअरूफ है जिस की १२ जिल्दे (Parts) है और हर जिल्द तकरीबन १००० सफो की इस तरह सिर्फ "फतावा-ए-रिजवीया" १२००० सफो पर फैली हुई हैं। आप का तरजमा-ए-कुरआन "कन्ज़ुल ईमान" उर्दू तरजमो मे सब से बेहतर और सही तरज़मा हैं।

आला हजरत को ५५ ऊलूम व फुनून मे महारत हासिल थी जिन में, इल्मे कुरआन, इल्मे हदीस, उसूले हदीस, उसूले फिक्ह, इल्मे तफसिर, इल्मे फलसफा, इल्मे नहव, इल्मे हिन्दसा, इल्मे कराएत, इल्मे तसव्वूफ, इल्मे इसमाऊर रिजाल, इल्मे तकसीर, इल्मे तारीख, इल्मे मुलूक, इल्मे जफर, इल्मे हया-ए-ते जदीदा, इल्मे मन्तीक, इल्मे लोगात, इल्मे खते नस्ख, इल्मे नस्र अरबी, फरसी, हिन्दी वगैरा वगैरा काबिले ज़िक्र है। शाएरी मे भी आप ने जो मुकाम पाया उस की मिसाल नहीं मिलती "हदाएके बख़शिश" के नाम से आप का नातीया दीवान मकबूले खास व आम है। और "मुस्तफा जाने रहमत पे लाखो सलाम" आप का यह ईमान अफरोज़ सलाम, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, ईराक, बंगलादेश, अफरीका, सुड़ान, इन्डोनेशिया, हालेन्ड, बरतानिया, तुरकी, इंग्लैंड, और मक्का व मदीना में बड़े ज़ौक व शौक के साथ ज़िक्रे रसूल की मैहफिलो मे पढा और सुना जाता है। अगर आप को कलम का बादशाह कहा जाए तो गलत न होगा।

शेर :- **इल्म का दरया हुआ है मौजाज़न** तहरीर मे !
जब कलम तू ने **उठाया अए इमाम अहमद** रज़ा !

इन्हीं चीजो से मुतासिर हो कर उलमा-ए-अरब व अजम ने बिल इत्तेफाक आप को चौदहवी सदी हिजरी का मुजद्दिदे आज़म तसलीम किया।

१२९६ हिजरी मे पहली मरतबा हज किया। और दूसरा हज १३२३ हिजरी मे किया और उसी मरतबा الدولة المكية (अद्दव्लतुल मक्कीया) नामी किताब, "इल्मे गैब" मे इन्कार करने वाले के रद मे सिर्फ आठ घंटो मे

लिखी। आप ने आखिर उमर तक बदमज़हबो, बदअकीदा लोगो का रद फरमाया।

आप के मुत्अल्लिक जितना भी लिखा जाए उतना कम है यहाॅ जितना भी बयान किया गया वह रेगिस्तान का एक ज़र्रा ही है । बस आप इस से ही अन्दाज़ा लगाइयि के जब ज़र्रे का यह आलम है तो रेगिस्तान का आलम क्या होगा।

आप का विसाल १३४० हिजरी मुताबिक १९२१ ईसवी को नमाज़े जुम्अ के वक्त बरेली शरीफ मे हुआ। आप का मज़ारे पुरअनवार आज भी बरेली शरीफ में महेल्ला सौदागरान मे अह्ले ईमान की आंखो की ठंडक, बे करारो का करार, बे आसरो का आसरा, गमज़दो का चैन, टूटे हुए दिलो का सहारा बना हुआ है।

फयेज़ जारी रहेगा हश्र तक तेरा इमाम !
काम है वह कर दिखाया अए इमाम अहमद रज़ा !

☀ कुछ किताब के बारे में ☀

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने एक तरफ मआशरे (Society) की इसलाह की खातिर भरपूर जददोजहेद की। मसलन तअज़ीयादारी, कब्रो को सजदा, कव्वाली, कब्रो का तवाफ, मज़ारात पर औरतो की हाज़री, बद आमाल पीरो की पीरी मुरीदी वगैरा के खिलाफ इल्मी व कल्मी जिहाद फरमा कर कौम की सही रहनुमाई का फरीज़ा अनजाम दिया. तो दूसरी तरफ अहले बिदअत, बदमज़हबो, बदअकीदो, की बे जा धान्दलियो को रोकने के लिये भी आप ने कल्मी जिहाद फरमाया

शेर :- **दौर बातिल और ज़लालत हिन्द मे था जिस घड़ी !**
तू मुजद्दिद बन के आया अए इमाम अहमद रज़ा !

आला हज़रत के कलम का एक अज़ीम शाहकार आप के हाथो में है। इस के मुतअल्लिक बस इतना कह देना काफी समझता हूॅ के इस रिसाले (छोटी किताब) "निदा-ए-या रसूल अल्लाह" मे आला हज़रत ने शरई हैसियत से कतार दर कतार दलीलो और सुबूतो की रौशनी में यह साबित किया है कि मुसीबत के वक्त अम्बिया-ए-किराम, औलिया व बुज़ुरगाने दीन को वसीला बनाना, उन से मदद माँगना उन्हें निदा करना (पुकारना) और या रसूल अल्लाह, या अली, या हसन, या हुसैन, या गौस, (या गरीब नवाज़) वगैरा कहना बे शक जाइज़ है। बल्कि यह इस्लाम का मुसल्लमा (महफूज़) अकीदा है जिस पर हर दौर मे सहाबा-तबाईन, तबेताबईन, अइम्मा, उलमा, व मशाएख का अमल रहा।

इस किताब का तरजमा पेश-करते हुए निहायत ही खुशी महसूस कर रहा हूँ। जहाँ तक मुमकिन था तरजमा को हुर्फ ब हुर्फ करने की कोशिश कि और जहॉ मुशकिल अल्फाज़ थे उन्हें समझाने के लिए ब्रेकिट में कर दिया गया है ताकि आला हज़रत का अंदाज़े बयान बरकरार रहे और जिन वाकेयात या रिवायत को तफसील से समझाना था उन्हें हाशियें में लिखा और हाशिये कि इबारत के बाद अपना नाम भी लिखा ताके मेरे अल्फाज़ और आला हज़रत के

किताब के अल्फ़ाज़ दोनों अलग अलग रहे। मुझे उम्मीद है यह तरजमा ज़रूर पसंद किया जाएगा।

अफसोस आज कल कुछ नाम नेहाद अपने मुँह मुसलमान होने का दावा करने वाले (जैसे वहाबी, देवबन्दी, मौदूदी वगैरा) इस पर ज़ोर देते है कि "या रसूल अल्लाह" कहेना शिर्क है। लफ्ज़ "या" से तो सिर्फ अल्लाह को ही पुकारना चाहिये और "या रसूल अल्लाह" कहने वाले मुशरिक है वगैरा वगैरा, हालाँकि यह हज़रात जिन उलमा को अपना दीनी पेशवा व बुज़ुर्ग मानते हैं वह खूद तकरीबन १५० सालो से खूद को मुसलमान साबित करने से कासिर हैं। इस पर यहाँ ज़्यादा तबसेरा करना मुमकिन नही।

थर थराए कांप उठे बागियाने मुस्तफा !
कहर बन के उन पे छाया अए इमाम अहमद रज़ा !

किताब पढ़ीये और हक व दयानत की रौशनी में खूद ही फैसला कीजिये। अल्लाह तआला मुसलमानो को समझने और अमल करने की तौफीक अता फरमाए । आमीन ।

सगेरज़ा
मुहम्मद फारूक खाँ अशरफी रिज़वी

मस्लके अअ्ला हज़रत पर मज़बूती से क़ाएम रहिए यही सिराते मुस्तक़ीम है। मस्लके अअ्ला हज़रत को समझने के लिए इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी की किताबों का मुतलआ़ कीजिए।

✹ इस्तिफ्ता ✹

क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मस्अले मे के ज़ैद (एक शख्स) खुदा को एक मानने वाला, मुसलमान जो खुदा और रसूल को जानता है । नमाज़ के बाद और दूसरे वक्तो मे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो **तआला** अलैह व सल्लम को बकल्मा-ए-"या" निदा करता है (यानी शब्द "या" से पुकारता है) और اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ [1]
(अस्सलातो वस्सलामो अलैका या रसूल अल्लाह) और
اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ [2]
(अस अलुकश शफा अता या रसूल अल्लाह) कहा करता है। यह कहेना जाइज़ है या नही ? जो लोग उसे (यानी "या रसूल अल्लाह" कहने वाले शख्स को) इस कल्मे की वजह से काफिर व मुशरिक कहे उन का क्यॉ हुक्म है ?
بِالْکِتَابِ تُوْجَرُوْا یَوْمَ الْحِسَابِ-

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَکَفٰی وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ
عَلٰی حَبِیْبِہِ الْمُصْطَفٰی وَاٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اُوْلِی الصِّدْقِ وَالصَّفَا-

✹ अलजवाब ✹

सवाल में पूछे गये कल्मात (यानी या रसूल अल्लाह कहेना) बे शक जाइज़ है। जिन के जाइज़ होने मे बहेस न करेगा मगर अहमक, जाहिल, या गुमराह, (और) गुमराह करने वाला, जिसे इस मस्अले के मुतअल्लिक ज़्यादा तफसील से जानना हो (वह) - - -

(१) शिफ़ाउस्सेकाम	इमामे अल्लाम बकियतुल मुजतहेदीनिल--किराम, तकीयुल मिल्लते वद्दीन **अबूल हसन अली सुबकी,**
(२) व मवाहेबे लदुननिया	**इमाम अहमद कुसतलानी**

---

[1] तरजमा :- आप पर दरूद व सलाम हो अए अल्लाह के रसूल

[2] तरजमा - अए अल्लाह के रसूल मै आप से शफाअत का सवाल करता हूं। (नाशिर)

(३) शारहे सही बुखारी- व शरहे मवाहेब,	अल्लामा ज़रकानी,
(४) मतालेउल मुस-र्रात,	अल्लामा फासी,
(५) मिरकात शरहे मिश्कात,	अल्लामा कारी,
(६) लमआत-व- अश्अतुललिम्आत शरहे - मिश्कात, -व-	शेख मोहककिक मौलाना अब्दुल हक मुहद्दिस दहलवी,
जज़्बुल कुलूब इला - दयारिल महबूब-व-	-!!- -!!- -!!-
मदारेजुन्नुबुवत,	-!!- -!!- -!!-
(७) अफज़लुल कुरअ शरहे इमामुल कुरअ,	इमाम इब्ने हजर मक्की,

वगैरहा किताबो का और इन उलमा-ए-किराम व फुज़ला-ए-इज़ाम (The Learneds,) अलैहिम रहेमतुल्लाहुल अज़ीम के कलाम (बातो) का मुतालअ (अध्ययन Reading) करे या फकीर का रिसाला

—— «الاهلال بفيض الاولياء بعد الوصال» ——

(अल अहलाल. बे फैज़िल औलिया-ए-बादल विसाल) को पढ़े ।

यहाँ फकीर ज़रूरत के मुताबिक चन्द बातें मुख्तसर लिखता है -
(१) इमाम नसाई (२) व इमाम तिर्मीज़ी (३) व इब्ने माजा (४) व हाकिम (५) व बयहकी (६) व इमामुल अइम्मा इब्ने हुज़ेमा (७) व अबुल कासिम तिबरानी, ने हज़रत ऊसमान बिन हुनैफ रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत किया और (इस रिवायत को) "तिर्मीजी" ने हसन गरीब[ص] सही, और तिबरानी व "बयहकी" ने सही और हाकिम ने "बुखारी" व "मुस्लिम" के हवाले से सही कहा और इमाम अब्दुल

ص१ हदीस के फ़न में हसन उस रिवायत को कहते है जिस का सुबूत लगातार मिले और उस रिवायत में कोई अयेब न हो। इसी तरह गरीब उस रिवायत को कहते है जिसे सिर्फ एक रावी बयान करे। 'फारूक'

अज़ीम मनज़री वगैरा अइम्मा (इमामो) ने जो हदीसो की परख रखने वाले और हदीसो को झूट की मिलावट से पाक करने वालें है ऐसे इमामो ने इस हदीस के सही होने को तसलीम किया व इसे बरकरार रखा जिस मे हुज़ूरे **अक़दस सैय्यदे आलम** सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने एक ना बीना (आंखो से अन्धे शख्स) को दुआ तालीम फरमाई के बाद नमाज़ यूँ कहे - - -

"इलाही मैं तुझ से माँगता और तेरी तरफ तवज्जह (उम्मीद) करता हूँ तेरे रहमत वाले नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के वसीले से **"या रसूल अल्लाह"** मैं हुज़ूर के वसीले से अपने रब (तआला) की तरफ इस हाजत में तवज्जह करता हूँ के मेरी हाजत पूरी हो - इलाही उन की शफाअत मेरे हक में कुबूल फरमा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ
اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ —
الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّىْ ——
اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰى رَبِّىْ فِىْ —
حَاجَتِىْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰى —
اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِىَّ ———
- - - - - - - -

"इमाम तिबरानी" की मअजम में यूँ हैं - - - -

यानी एक हाजत मन्द अपनी हाजत के लिये अमीरूलमोमेनीन उसमाने गनी रदीअल्लाहो तआला अन्हो की खिदमत मे आता जाता, (लेकिन) अमीरूलमोमेनीन हज़रत ऊसमाने गनी न उस की तरफ देखते न उस की हाजत पर नज़र फ़रमाते उस ने हज़रत उसमान बिन हुनैफ रदीअल्लाहो तआला अन्हो,से इस बात की शिकायत की-उन्हों ने फरमाया, वज़ू कर के मस्जिद मे दो रकअत नमाज़ पढ़ फिर दुआ माँग "इलाही मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ अपने नबी मुहम्मद

اِنَّ رَجُلًا كَانَ يَخْتَلِفُ اِلٰى —
عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى
عَنْهُ فِىْ حَاجَةٍ لَهٗ وَكَانَ عُثْمَانُ
لَا يَلْتَفِتُ اِلَيْهِ وَلَا يَنْظُرُ فِىْ —
حَاجَتِهٖ فَلَقِىَ عُثْمَانَ بْنَ حُنَيْفٍ
رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ فَشَكٰى ذٰلِكَ
اِلَيْهِ فَقَالَ لَهٗ عُثْمٰنُ ابْنُ حُنَيْفٍ —
رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ اِئْتِ
الْمِيْضَاءَ فَتَوَضَّاْ ثُمَّ ائْتِ الْمَسْجِدَ
فَصَلِّ فِيْهِ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ قُلِ اَللّٰهُمَّ
اِنِّىْ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا
نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّىْ —

सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम के वसीले से तवज्जह (उम्मीद) करता हूँ **"या रसूल अल्लाह"** मै हुज़ूर के वसीले से अपने रब (अज़्ज़ व जल) की तरफ मुतवज्जह होता हूँ के मेरी हाजत पूरी फरमाइये"

अपनी हाजत ज़िक्र कर के फिर शाम को मेरे पास आना के मैं भी तेरे साथ—चलूँ । हाजत मन्द ने के (वह भी सहाबी या फिर कम अज़ कम बड़े बुज़ुर्ग ताबईन से थे) यूँ ही किया फिर आसताने खिलाफत (यानी उसमाने गनी के मकान) पर हाज़िर हुए। दरबान आया और हाथ पकड़ कर अमीरूलमोमेनीन के पास ले गया। अमीरूलमोमेनीन (उसमाने गनी) ने अपने साथ तख्त पर बिठा लिया-मतलब पूछा-उन्होंने अपनी हाजत बयान फरमाई अमीरूलमोमेनीन ने पूरी फरमादी और इरशाद फरमाया के "इतने दिनों में तुम ने अपनी हाजत बयान किया। फिर फरमाया जो हाजत तुम्हें पेश आया करें हमारे पास चले आया करो।

यह साहब वहाँ से निकल कर ऊसमान बिन हुनैफ रदीअल्लाहो तआला अन्हो से मिले और कहा "अल्लाह तुम्हें जज़ाए ख़ैर दें - अमीरूल मोमेनीन मेरी हाजत पर नजर और मेरी तरफ तवज्जह न फरमाते थे यहाँ तक के

أَتَوَجَّهُ بِكَ إِلَىٰ رَبِّي فَيَقْضِي حَاجَتِي وَتَذْكُرُ حَاجَتَكَ وَرُحْ إِلَيَّ أَرُوحَ مَعَكَ۔
فَانْطَلَقَ الرَّجُلُ فَصَنَعَ مَا قَالَ لَهُ ثُمَّ أَتَىٰ بَابَ عُثْمَانَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَنْهُ فَجَاءَ الْبَوَّابُ حَتَّىٰ أَخَذَهُ بِيَدِهِ فَأَدْخَلَهُ عَلَىٰ عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَنْهُ۔ فَأَجْلَسَهُ مَعَهُ عَلَى الطِّنْفِسَةِ وَقَالَ حَاجَتُكَ؟ فَذَكَرَ حَاجَتَهُ فَقَضَاهَا ثُمَّ قَالَ مَا ذَكَرْتَ حَاجَتَكَ حَتَّىٰ كَانَتْ هٰذِهِ السَّاعَةُ وَقَالَ مَا كَانَ لَكَ مِنْ حَاجَةٍ فَأْتِنَا ثُمَّ إِنَّ الرَّجُلَ خَرَجَ مِنْ عِنْدِهِ فَلَقِيَ عُثْمَانَ بْنَ حُنَيْفٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَنْهُ فَقَالَ لَهُ جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا مَا كَانَ يَنْظُرُ فِي حَاجَتِي وَلَا يَلْتَفِتُ إِلَيَّ حَتَّىٰ كَلَّمْتَهُ فِيَّ فَقَالَ عُثْمَانُ بْنُ حُنَيْفٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَنْهُ وَاللّٰهِ مَا كَلَّمْتُهُ وَلٰكِنْ شَهِدْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَتَاهُ رَجُلٌ ضَرِيرٌ فَشَكَا إِلَيْهِ ذَهَابَ بَصَرِهِ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِئْتِ الْمِيضَاةَ فَتَوَضَّأْ ثُمَّ صَلِّ رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ ادْعُ بِهٰذِهِ الدَّعَوَاتِ فَقَالَ عُثْمَانُ بْنُ

حُنَيْفٍ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ فَوَاللّٰهِ مَا تَفَرَّقْنَا وَطَالَ بِنَا الْحَدِيْثُ حَتّٰى دَخَلَ عَلَيْنَا الرَّجُلُ كَاَنَّهٗ لَمْ يَكُنْ بِهٖ ضُرٌّ قَطُّ

आप ने उन से मेरी शिफारिश की "उसमान बिन हुनैफ रदीअल्लाहो तआला अन्हों ने फरमाया-" खुदा की कसम मैं ने तुम्हारे मामले में अमीरूलमोमेनीन से कुछ भी न कहा था-मगर हुआ यह कि मैं ने सैय्यदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को देखा, हुज़ूर की खिदमत में एक ना बीना (अन्धे शख्स) हाज़िर हुए और नाबीना होने की शिकायत की हुज़ूर ने यूँही उन से इरशाद फरमाया के वज़ू कर के दो रक्अत नमाज़ पढ़े फिर यह दुआ करे ----- खुदा की कसम हम उठने भी न पाए थे बातें ही कर रहे थे कि वह हमारे पास आ गये - जैसे कभी अन्धे न थे।

इमाम तिबरानी, फिर **इमाम मनज़री** फरमाते है "यह हदीस सही है" **इमाम बुखारी** كتاب الادب المفرد में और **इमाम इब्नुस्सुन्नी** और **इमाम इब्ने बश्कुवाल**, रिवायत करते है ---

اِنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا خَدِرَتْ رِجْلُهٗ فَقِيْلَ لَهٗ اُذْكُرْ اَحَبَّ النَّاسِ اِلَيْكَ فَصَاحَ يَا مُحَمَّدَاهُ — فَانْتَشَرَتْ —

यानी **हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर** रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा का पॉव सुन[1] हो गया। किसी ने कहा उन्हें याद कीजिये जो आप को सब से ज़्यादा महबूब हैं। हज़रत ने बा आवाज़े बुलन्द कहा **"या मुहम्मदाह"** फौरन पॉव अच्छा हो गया।

इमाम नववी "शारहे सही मुस्लिम" रहमतुल्लाह अलैह ने "किताबुल अज़कार" में इसी तरह का वाकिअ, हज़रत **अब्दुल्लाह बिन अब्बास**

[1] पॉव सुन हो गया यानी फैलने और मुड़ने की ताकत खत्म हो गई थी।

रदीअल्लाहो तआला अन्हुमा से नक्ल फरमाया कि - -

"उन का पॉव सोया (सुन हो गया) तो **या मुहम्मदाह** कहा अच्छा हो गया"।

और इस तरह का वाकिअ इन दो सहाबियो के सिवा औरो से भी मरवी (रिवायत) हुआ है।

अहले मदीना[1] नें बहुत पहले से इस या मुहम्मदाह कहने की आदत चली आती हैं।

अल्लामा शहाबुद्दीन मिसरी, "नसीमुल रियाज़ शरहे शिफा-ए-इमाम काज़ी अयाज़" में फरमाते है - - - -

(या मुहम्मदाह) कहना मदीने में रहने वालो का मामूल (रोज़ाना का अमल) था।

— هٰذَا مِمَّا تَعَاهَدَهٗ —
— أَهْلُ الْمَدِيْنَةِ ٥ —

हज़रत बिलाल बिन हारिस मज़नी से कहते (अकाल, सुखा) "आमुर रमादह" मे के (हज़रत) फारूके आज़म रदीअल्लाहो तआला अन्हो की खिलाफत के ज़माने मे सन १८ हिजरी में वाक्अे हुआ, उन की (यानी हज़रत बिलाल बिन हारिस मज़नी) की कौम "बनी मज़निया" ने दरख्वास्त (गुज़ारिश, Request) की के (हम) मरे जाते है कोई बकरी ज़ुबह कीजिये फरमाया, बकरियो मे कुछ नहीं रहा हैं, उन्हों ने (यानी कौम ने) इसरार किया-आखिर ज़ुबह कि खाल खींची तो सिर्फ लाल हड्डी निकली देख कर हज़रत बिलाल बिन हारिस रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने दुआ कि - **या मुहम्मदाह** फिर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम ने ख्वाब में तशरीफ ला कर बशारत दी।[2]

(यानी इस वाकिअ को "कामिल" में जिक्र फरमाया है) ذَكَرَهٗ فِي الْكَامِلِ

इमामे मुजतहेद फकीहे अजल **अब्दुल रहमान हुज़ाली, कूफी, मसऊदी**, के हज़रत **अब्दुल्लाह बिन मसऊद** रदीअल्लाहो तआला अन्हो, के पोते और अजलल-ए-तबे ताबईन (यानी बहुत जलीलुलकद्र तबे ताबईन) व

---

1. अहले मदीना :- मदीने के रहने वाले,
2. यानी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम ने ख्वाब में आकर बशारत दी के मुसा उन्द ही ख़त्म होने वाला है। (कामील इब्ने असीर, जिल्द २ सफा नं २०४

अकाबिरे अइम्मा-ए-मुजतहेदीन (पहले के बड़े बुज़ुर्ग इमामो) से है।

सर पर बुलन्द (लम्बी) टोपी रखते, जिस मे लिखा था "**मुहम्मद या मन्सूर**"! और ज़ाहिर है के اَلْقَلَمُ اَحَدُ اللِّسَانَيْنِ

हुशैम बिन जमील अनताकी, के सच्चे भरोसेमन्द उलमा-ए-मुहद्देसीन से है इन्ही इमामे अजल (यानी इमाम अब्दुल रहमान हुज़ली कूफी मसऊदी) के बारे में फरमाते है - - - -

رَاَيْتُہٗ وَعَلٰی رَاْسِہٖ قَلَنْسُوَۃٌ اَطْوَلُ مِنْ ذِرَاعٍ مَکْتُوْبٌ فِیْھَا مُحَمَّدٌ یَا مَنْصُوْرُ ذَکَرَہٗ فِیْ تَہْذِیْبِ التَّہْذِیْبِ وَغَیْرِہٖ ——

मैंने उन्हें इस हाल मे देखा के उन के सर पर गज़ भर की(लम्बी) टोपी थी जिस में लिखा था **मुहम्मद या मन्सूर**,जिस को "तहज़ीबित तहज़ीब" वगैरा ने ज़िक्र किया है ।

इमान शेखुल इस्लाम **शहाबुद्दीन** रूमली अन्सारी के फतावा में हैं

سُئِلَ عَمَّا یَقَعُ مِنَ الْعَامَّۃِ مِنْ قَوْلِھِمْ عِنْدَ الشَّدَائِدِ یَا شَیْخُ فُلَانٍ - وَنَحْوَ ذٰلِکَ مِنَ الْاِسْتِغَاثَۃِ بِالْاَنْبِیَاءِ —— وَالْمُرْسَلِیْنَ وَالصَّالِحِیْنَ وَھَلْ لِلْمَشَائِخِ اِغَاثَۃٌ بَعْدَ مَوْتِھِمْ اَمْ لَا؟ —— فَاَجَابَ بِمَا نَصُّہٗ اَنَّ الْاِسْتِغَاثَۃَ بِالْاَنْبِیَاءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ —— وَالْاَوْلِیَاءِ وَالْعُلَمَاءِ الصَّالِحِیْنَ جَائِزَۃٌ وَلِلْاَنْبِیَاءِ وَالرُّسُلِ —— وَالْاَوْلِیَاءِ وَالصَّالِحِیْنَ اِغَاثَۃٌ بَعْدَ مَوْتِھِمْ اِلَخ —— ٥

यानी उन से फतवा पूछा गया के आम लोग जो सख्तीयो (परेशानियो) के वक्त अम्बिया (नबीयो) व मुरसलीन (रसूलो) और औलिया व सालेहीन (नेक लोगो) से फरयाद करते है और **या रसूल अल्लाह, या अली, या शेख अब्दुल कादिर जीलानी**, और इस तरह के दूसरे कलमात कहते है यह जाइज़ है या नही ? और औलिया इन्तेकाल के बाद भी मदद फरमाते है या नही ?

उन्होंने जवाब दिया - - " बेशक अम्बिया व मुरसलीन और औलिया व उलमा से मदद मॉगनी जाइज़ है और वह इन्तेकाल के बाद भी मदद फरमाते है।"

ع तरजमा :- कलम दो जबानो में से एक है। 'फारूक'

अल्लामा **खैरूद्दीन रूमली** उस्ताज़ साहिबे "दुर्रे मुख्तार"[1] "फतावा-ए-खैरयाह" में फरमाते है - -

लोगो का कहना है कि या शेख अब्दुल कादिर यह एक निदा (मदद के वक्त का नारा) है फिर इस की हुरमत (मना होने) का क्या सबब (कारण) है !!

قَوْلُهُمْ يَا شَيْخَ عَبْدَ الْقَادِرِ نِدَاءٌ

فَمَا الْمُوْجِبُ لِحُرْمَتِهٖ ؕ

सैय्यदी जमाल बिन अब्दुल्लाह बिन ऊमर मक्की, अपने फतावा में फरमाते है - - - -

यानी मुझ से सवाल हुआ उस शख्स के बारे में जो मुसीबत के वक्त कहता है या रसूल अल्लाह, या अली, या शेख अब्दुल कादिर, और इस तरह के दूसरे कलमात, क्या यह शरीअत में जाइज़ है या नही ?

मैंने जवाब दिया हाँ औलिया से मदद माँगना और उन्हें मुसीबत के वक्त पुकारना और उन का वसीला चाहना शरीअत में जाइज़ और पसंदीदा चीज़ है जिस का इन्कार न करेगा मगर हट धर्म या औलिया अल्लाह से दुश्मनी रखने वाला, और बे शक वह औलिया-ए-किराम की बरकत से महरूम है !

سُئِلْتُ عَمَّنْ يَقُوْلُ فِيْ حَالِ الشَّدَائِدِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَوْ يَا عَلِيُّ اَوْ يَا شَيْخَ عَبْدَ الْقَادِرِ مَثَلًا هَلْ هُوَ جَائِزٌ شَرْعًا اَمْ لَا ؟ اَجَبْتُ نَعَمْ الْاِسْتِغَاثَةُ بِالْاَوْلِيَاءِ وَنِدَاءُهُمْ وَالتَّوَسُّلُ بِهِمْ اَمْرٌ مَشْرُوْعٌ وَشَيْئٌ مَرْغُوْبٌ لَا يُنْكِرُهٗ اِلَّا مُكَابِرٌ اَوْ مُعَانِدٌ وَقَدْ حُرِمَ بَرَكَةَ الْاَوْلِيَاءِ الْكِرَامِ

الخ ـــــــــ

— — — — — — —

इमाम इब्नेजवज़ी, ने किताब "ऊयुनूल हिकायात" मे तीन औलिया-ए-इज़ाम. का अजीमुश शान वाकिअ लगातार बहुत से सुबूतो से रिवायत किया, कि - - -

वह तीन (३) भाई घोड़ो पर सवार रहने वाले "मुल्के शाम" से

[1] यानी अल्लामा खैरूद्दीन रूमली रहमतुल्लाह अलैह उस्ताद है "दुर्रे मुख्तार" के लेखक अल्लामा अलाऊद्दीन मुहम्मद बिन अली हस्काफी रहमतुल्लाह अलैह के [illegible] 'नाशक'

रहते थे । हमेशा राहे ख़ुदा मे जिहाद (काफिरो से जंग) करते थे ।

यानी एक बार (मुल्के) रूम के ईसाई उन्हें कैद कर के ले गये बादशाह ने कहा के मै तुम्हें सलतनत (हुकूमत) दूगॉ और अपनी बेटिया ब्याह दूगॉ तुम ईसाई हो जाओ - उन्होंने न माना और निदा की (पुकारा) **या मुहम्मदाह,**

बादशाह ने तेल गर्म करा कर दो भाईयो को उस मे ड़ाल दिया तीसरे को अल्लाह तआला ने एक सबब पैदा फरमा कर बचा लिया वह दोनो छे (६) महीने के बाद एक फरिशतो की जमाअत के साथ बेदारी मे उन के पास आए और फरमाया "अल्लाह तआला ने हमें तुम्हारी शादी में शरीक होने के लिये भेजा है "। उन्होंने हाल पूछा - - फरमाया - - -

مَا كَانَتْ إِلَّا الْغَطْسَةُ الَّتِيْ رَأَيْتَ حَتّٰى خَرَجْنَا فِي الْفِرْدَوْسِ -

बस वही तेल का एक गोता (डूबकी) थी जो तुमने देखा उस के बाद हम जन्नतुल फिरदौस मे थे ।

इमाम (इब्ने जवज़ी) फरमाते है - - - - - -

كَانُوْا مَشْهُوْرِيْنَ بِذٰلِكَ مَعْرُوْفِيْنَ بِالشَّامِ فِي الزَّمَنِ الْأَوَّلِ -

यह हज़रात (यानी यह तीनो भाई) ज़माने सलफ (पहले के ज़माने) में "शाम" में मशहुर थे और उन का यह वाकिअ बहुत मशहूर है।

फिर फरमाया - - - शाएरो ने उन की शान व तारीफ में कसीदे लिखे उन तमाम कसीदो में सिर्फ एक शेर इस ख्याल से कि बात लम्बी न हो जाए मुख्तसरन ज़िक्र फरमाया - - -

سَيُعْطِي الصَّادِقِيْنَ بِفَضْلِ صِدْقٍ
نَجَاةً فِي الْحَيٰوةِ فِي الْمَمَاتِ

तरजमा :- करीब है कि अल्लाह तआला सच्चे ईमान वालो को उन के सच की बरकत से हयात व मौत मे निजात बख़्शेगा।

यह वाकिअ अजीब, नफीस व रूह प्रवर (यानी रूह को ताज़गी देने वाला) है। मैं इसे इस ख्याल से कि किताब का मज़मून बड़ जाएगा मुख्तसर कर गया । तमाम व मुकम्मल पुरा वाकिअ **इमाम जलालुद्दीन सुयूती,** की (किताब) "शरहुस्सुदूर" में हैं। — — — — — — — — — —

जिसे इस वाकिअ की तफसील देखना हो वह "शरहुस्सुदूर" का मुतालअ (अध्ययन) करे ـــ[1]

مَنْ شَآءَ فَلْيَرْجِعْ اِلَيْهِ

यहाँ मकसद इस कदर है कि मुसीबत में या रसूल अल्लाह, कहना अगर शिर्क है तो मुशरिक की मगफेरत व शहादत कैसी और जन्नतुल फिरदौस मे जगह पाना क्या मअनी और उन की शादी मे फरिश्तो का भेजना क्यो कर अक्ल मे आने वाला, और उन अइम्मा-ए-दीन ने यह रिवायत क्यो

ـــ[1] क्यों कि यह वाकिअ बड़ा है और चुकि आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह यह किताब मुख्तसर लिखना चाहते थे इसलिए आपने यहाँ यह वाकिअ मुख्तसर बयान फरमाया। लेकिन हम यहाँ पढने वालो कि दिलचस्पी और मालूमात में इजाफे कि नियत से पूरा नक्ल कर रहे है - -- -।

इमाम जलालुद्दीन सुयूती रदिअल्लाहो तआला अन्हो ने अपनी किताब "शरहुस्सुदूर" में इस वाकिअ को इस तरह रिवायत किया कि - -

तीन शामी भाई रूमियो से जिहाद करते थे एक मरतबा रूमी बादशाह उन्हें गिरफ्तार करने में कामयाब हो गया। बादशाह ने उनसे कहाँ मैं तुम्हें अपनी हुकूमत में हिस्सेदार कर दूगां और अपनी लड़कीयाँ तुम्हारे निकाह में दूंगा लेकिन शर्त यह है कि तुम ईसाई बन जाओ मगर उन तीनो भाईयो ने साफ इन्कार कर दिया।

फिर बादशाह ने तीन देगे तेल कि तीन रोज़ तक आग पर चड़ाए रखी और उन्हें ड़राने के लिए रोज़ाना वह देगे दिखाता लेकिन तीनो भाई अपनी बात पर डटे रहे। आखिर कार पहले बडे भाई को देग में डाला गया फिर मंझले भाई को भी खौलते हुए तेल में डुबो दिया गया। दोनो भाईयों ने या मुहम्मदा का एक बुलन्द नारा लगाते हुए तेल में डुबकी मारा और शहीद हो गये। अब तीसरे की बारी थी जब छोटे भाई को देग के करीब लाया गया तभी एक रूमी सरदार खडा हुआ और कहाँ -अए बादशाह इसको कुछ दिनों कि मोहलत दे दीजिये मैं इसको बेहला फुसलाकर इसाई बना लुंगा यह अरब लोंग औरतो को बहोत पसंद करते है मैं इसे अपनी लड़की के हवाले कर दुंगा वह खुद इसे इसके दीन से फिरा देंगी।

सरदार उस मुजाहिद को अपने घर लाया और सब मामला अपनी लड़की को समझाकर मुजाहिद को उसके हवाले कर गया मगर वह मुत्तकी मुजाहिद दिन भर रोज़ा रखता और रात भर इबादत में मशगूल रहता और उसकी तवज्जह बिल्कुल लड़की की तरफ न होती। सरदार की लड़की उस मुजाहिद के तकवे और इबादत को देखकर इसकदर मुतासिर (प्रभावित) हो गयी के वह उस मुजाहिद पर खुद ही आशिक हो गयी और कलमा पढ़कर मुसलमान हो गई ।

एक रात मौका पाकर वह दोनो एक घोड़े पर सवार होकर वहाँ से भाग निकले - दिन में छुपते और रात में चलते - एक दिन दोनो ने अचानक कुछ घोड़ो की टापो की आवाजे सुनी - मुजाहिद ने करीब जा कर देखा तो मुजाहिद के दोनो भाई थे जो खौलते हुए तेल में डाल दिये गये थे और उनके साथ फरिश्तो कि एक जमाअत भी थी। मुजाहिद ने करीब पहोच कर अपने दोनो भाईयो को सलाम किया और हाल दरयाफ्त किया - वह दोनों कहने लगे के बस हम ने तेल में एक डुबकी लगाई, उसके बाद हम जन्नतुल फिरदौस में थे और अब हमें इसलिए भेजा गया है कि तुम्हारी शादी इस लडकी से कर दें।

चुनानचे दोनो शहीद भाईयो ने फरिश्तो कि जमाअत के साथ निकाह में शिर्कत की और फिर रवाना हो गये और यह दुल्हा, दुल्हन सलामती के साथ "मुल्केशाम" मे पहोच गये।

(शरहुस्सुदूर, सफा न १९३)

। फारूक ।

कर कुबूल की और उन (तीनो भाईयो) की शहादत व विलायत (वली होना) किस वजह से तस्लीम किया और वह मर्दाने खुदा, खूद भी सलफे सालेह (यानी अव्वल वक्त के नेक बुज़ुर्गो) में से थे कि यह वाकिअ "तरतूस" की आबादी से पहले का है।

जैसा के रिवायत में लिखा है। | كَمَا ذَكَرَهُ فِى الرِّوَايَةِ نَفْسِهَا

और "तरतूस" में एक शहर है यानी दारूल इस्लाम की सरहद का शहर जिसे खलीफा हारून रशीद रहमतुल्लाह अलैह ने आबाद किया -

जैसा के इमाम जलालुद्दीन सुयूती ने "तारीखुल खुलफा" में इस का ज़िक्र किया है। | كَمَا ذَكَرَهُ الْاِمَامُ السُّيُوطِىُّ فِى تَارِيْخِ الْخُلَفَاءِ

हारून रशीद का ज़माना, ताबईन व तबे ताबईन का था तो यह तीनो शोहदा-ए-किराम अगर ताबई न थे तो कम अज़ कम तबे ताबईन से थे।
(अल्लाह ही हिदायत फरमाने वाला है) وَاللّٰهُ الْهَادِىْ۔

हुज़ूर सैय्यदना गौसे आज़म रदीअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते है -

مَنِ اسْتَغَاثَ بِىْ فِىْ كُرْبَةٍ كُشِفَتْ عَنْهُ وَمَنْ نَادٰى بِاسْمِىْ فِىْ شِدَّةٍ فُرِّجَتْ عَنْهُ وَمَنْ تَوَسَّلَ بِىْ اِلَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ فِىْ حَاجَةٍ قُضِيَتْ لَهُ وَمَنْ صَلّٰى رَكْعَتَيْنِ يَقْرَأُ فِىْ كُلِّ رَكْعَةٍ بَعْدَ الْفَاتِحَةِ سُوْرَةَ الْاِخْلَاصِ اِحْدٰى عَشَرَةَ مَرَّةً ثُمَّ يُصَلِّىْ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعْدَ السَّلَامِ وَيُسَلِّمُ عَلَيْهِ وَيَذْكُرُنِىْ ثُمَّ يَخْطُوْ اِلٰى جِهَةِ الْعِرَاقِ اِحْدٰى عَشَرَةَ خُطْوَةً يَذْكُرُ فِيْهَا اِسْمِىْ وَيَذْكُرُ حَاجَتَهُ فَاِنَّهَا تُقْضٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ○

यानी जो किसी तकलीफ मे मुझ से फरयाद करे व तकलीफ खत्म हो और जो किसी परेशानी मे मेरा नाम ले कर निदा करे (यानी मुझे पुकारे) वह परेशानी दूर हो और जो किसी हाजत में अल्लाह की तरफ मेरा वसीला पेश करे वह हाजत पूरी हो जाए - और जो दो रकअत नमाज़ अदा करे हर रकअत मे सूराहे फातेहा के बाद सूराहे इख्लास: قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ गयारा (११) बार पढे फिर सलाम फेर कर नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पर दरूद शरीफ व सलाम भेजे फिर ईराक शरीफ की तरफ गयारा (११) कदम चले, उन मे मेरा नाम

लेता जाए और अपनी हाजत याद करे उस की वह हाजत पूरी हो, अल्लाह के हुक्म से,

- - - - - - - - - -
— — — — — — —
— — — —

अकाबिर उलमा-ए-किराम व औलिया-ए-इज़ाम, जैसे **इमाम अबूल हसन नूरूद्दीन अली** जरीर लखमी शतनूनी, व इमाम **अब्दुल्लाह बिन असअद** याफअई मक्की, व मौलाना **अली कारी मक्की** साहिबे (लेखक) "मिरकात शरहे मिश्कात" व मौलाना **अबुल मआली मुहम्मद मुसलमी** कादरी व शेख नोहककिक मौलाना **अब्दुल हक मुहद्दिस दहलवी** वगैराहम रहमतुल्लाह अलैहिम, अपनी किताबो मे (जैसे) "बहजतुल असरार" व "खुलासतुल मुफाखिर" व "नज़हतुल खातिर" व तोहफ-ए-कादरिया" व "ज़ुबदतुल आसार" वगैरा मे यह कलनाते रहमत **हुज़ूर गौसे आज़म** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से नक़्ल व रिवायत करते है।

यह इमाम **अबूल हसन नूरूद्दीन अली,** मुसन्निफ (जो लेखक है) "बहजतुल असरार" शरीफ (के) बड़े बड़े उलमा व अइम्मा (इमामो) के उस्ताद और औलिया-ए-किराम में बुज़ुर्ग व सादाते तरीकत ये है । हुज़ूर **गौसुल सकलैन (गौसे आज़म)** रदीअल्लाहो तआला अन्हो तक सिर्फ दो (२) वासते रखते है (यानी) इमामे अजल हज़रत **अबू सालेह नस्र** कुद्देसा सिर्रहु से फयेज़ हासिल किया-उन्हों ने अपने वालिदे माजिद हुज़ूर हज़रत **अबूबकर ताजुद्दीन अब्दुल रज़्ज़ाक** नूरूल्लाह मरकदहु से, उन्होंने अपने वालिदे माजिद हुज़ूर पुरनूर सैय्यदुस्सादात (सैय्यदो के सरदार) **गौसे आज़म** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से,

शेख **मोहककिक** (हज़रत शाह अब्दुल हक मुहद्दीस दहलवी) रहमतुल्लाह तआला अलैह, "ज़ुबदतुल आसार" शरीफ मे फरमाते है - - -

"यह किताब "बहजतुल आसार" किताबे अज़ीम व शरीफ मशहूर है और इस के मुसन्निफ (लेखक, हजरत इमाम अबुल हसन) उलमा के उस्तादो से आलिम मअरूफ व मशहूर (है) और उन की जिन्दगी के हालाते शरीफा किताबो मे मौजूद और लिखे हुए हैं "

इमाम शमसुद्दीन ज़ैहबी, के इल्मे हदीस व (इल्मे) "इस्माऊर रिजाल"[1] मे जिन की जलालते शान सारी दुनिया मे खुली हुई ज़ाहिर है इस जनाब (यानी इमाम अबूल हसन) की मजालिस मे हाज़िर हुए और अपनी किताब "तबकातुल मुकर्रीन" मे उन की बहुत तारीफे लिखी।

इमाम मुहद्दिस **मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन जज़री,** मुसन्निफ (लेखक)"हिस्ने हसीन" उन के शागिरदो मे हैं उन्होंने (यानी इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन जज़री) ने यह किताब "बह जतुल असरार" शरीफ अपने शेख (इमाम शमसुद्दीन ज़ैहबी) से पढ़ी और उस की सनद व इज़ाजत (इस किताब की रिवायतो से रिवायत करने की इज़ाजत) हासिल की,

इन सब बातो की तफसील और इस मुबारक नमाज़ की शरअई दलीले और बाते व उलमा व औलिया का इस पर अमल व सुबूत फकीर के रिसाले (किताब) "انہار الانوار من یم صلوۃ الاسرار"
(अनहारूल अनवार मिन यम सलातिल असरार) मे है।

(तुम पर उस का पढ़ना जरूरी है उस मे ऐसी बातें पाओगे जो सीने को रौशन कर देगी और जहालत दूर हो जाएगी और सब खुबिया अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालो का)

نَعَلَیْكَ بِهَا تَجِدُ فِیْهَا مَا یَشْفِی الصُّدُوْرَ وَیَكْشِفُ الْعَمٰی ——
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ — —
— — — — — — — — — —

इमाम आरिफ बिल्लाह सैय्यदी **अब्दुल वहाब शिरानी** कुद्देसा सिर्रहुर रब्बानी, मशहूर किताब "लेवाकेऊल अनवार फी तबकातुल अखयार" में फरमाते है - - -

"**सैय्यद मुहम्मद गमरी** रदीअल्लाहो तआला अन्हो, के एक मुरीद बाज़ार मे तशरीफ ले जाते थे, उन के जानवार का पॉव फिसला, बा आवाज़े बुलन्द पुकारा **या सैय्यदी मुहम्मद गमरी** !

ऊधर इब्ने ऊमर हाकिमे सईद को, सुलतान चकमक के हुक्म से (कुछ सिपाही) कैद किये लिये जाते थे इब्ने ऊमर ने फकीर (यानी सैय्यद मुहम्मद गमरी, के मुरीद) का बुलन्द आवांज़ से पुकारना सुना-पुछा यह सैय्यदी मुहम्मद कौन है ? कहा, मेरे शेख है ! कहा मैं (इब्ने ऊमर) ज़लील भी कहेता हूँ - - - - - -

[1] वह इल्म जिसमें किसी हदीस के रावीयों के बारे में इल्म बीन कि जाती है। के इस हदीस का फलॉ रावी कौन है, वह कैसा था, कहाँ पैदा हुआ कब इन्तेकाल हुआ वगैरा वगैरा। ! फारूक !

या सैय्यदी मुहम्मद या गमरी ला हिज़नी, अए मेरे सरदार अए मुहम्मद गमरी मुझ पर नज़रे इनायत करो ! - उन का यह कहना (था) के हज़रत सैय्यदी मुहम्मद गमरी रदीअल्लाहो तआला अन्हो, तशरीफ लाए और मदद फरमाई के बादशाह और उस के लशकरियो की जान पर बन आई मजबुरन इब्ने उमर को खिलअत[خلعت] दे कर रूखसत किया।

उसी मे (यानी इमाम सैय्यदी अब्दुल वहाब शिरानी, की किताब "लेवाकेऊल अनवार फी तबकातुल अखयार" मे) है - - - -

सैय्यदी शमसुद्दीन मुहम्मद हनफी रदीअल्लाहो तआला अन्हो अपने खास हुजरेह (कमरे) मे वज़ू फरमा रहे थे। अचानक एक खड़ाओ (लकड़े की चप्पल) हवा पर फेंकी के गाएब हो गई । हालॉकि हुजरेह मे कोई रास्ता खड़ाओ के जाने का ना था। दूसरी खड़ाओ अपने खादिम को अता फरमाई के इसे अपने पास रहने दे, जब तक वह पहली वापस आए।

एक मुद्दत (अवधी) के बाद "मुल्के शाम" से एक शख्स वह खड़ाओ और तोहफो के साथ वापस लाया और अर्ज़ कि (कहने लगा) "अल्लाह तआला हज़रत को जज़ाए खैर दे जब चोर मेरे सीने पर मुझे कत्ल करने बैठा, मैंने अपने दिल में कहा **या सैय्यदी मुहम्मद या हनफी** उसी वक्त यह खड़ाओ गैब से आ कर उस के सीने पर लगी और वह चक्कर खा कर उलटा हो गया और मुझे हज़रत की बरकत से अल्लाह अज़्ज़ व जल ने निजात बखशी।

उसी किताब ("लेवाकेऊल अनवार फी तबकातुल अखयार") में है

वली-ए-म्मदूह (यानी हज़रत सैय्यदी शमसुद्दीन मुहम्मद हनफी रदीअल्लाहो तआला अन्हो) की मुकद्देसा (पाक) बीवी, बीमारी से मौत के करीब हो गई वह यूँ पुकारा करती थी - - -

या सैय्यदी (अए मेरे सरदार) अए अहमद बदवी हज़रत की तवज्जह मेरे साथ है

یاسیدی احمد یا بدوی خاطرک معی

एक दिन हज़रत सैय्यदी अहमद कबीर बदवी रदीअल्लाहो तआला अन्हो, को ख्वाब मे देखा के फरमाते हैं--

"कब तक मुझे पुकारेगी और मुझ से फरयाद करेगी ! तू जानती

خلعت वह लिबास जो बादशाह ब तौर इनाम किसी को अता करते है उसे खिलअत कहते है। ' फारूक '

नहीं तू (खूद तो) एक बड़े साहिबे तमकीन (यानी अपने शोहर, सैय्यदी शमसुद्दीन मुहम्मद हनफी) की हिमायत में है और जो किसी बड़े वली की दरगाह मे होता है हम उस की निदा (आवाज़ देने) पर जवाब नहीं देते। यूँ कहे **"या सैय्यदी मुहम्मद या हनफी"**! यह कहेगी तो अल्लाह तआला तुझे सेहत बखशेगा। उन बीबी ने यूँ ही कहा, सुबह को खासी तनदुरूस्त उठी जैसे कभी मरज़ न था। (यानी बीमारी थी ही नहीं)

उसी (किताब) में है - - -

हज़रते म्मदूह (यानी सैय्यदी शमसुद्दीन मुहम्मद हनफी)-रदीअल्लाहो तआला अन्हो, मरज़े मौत (यानी उस बीमारी मे जिस मे आप का इन्तेकाल हुआ) मे फरमाते थे - - -

"जिसे कोई हाजत हो वह मेरी कब्र पर हाज़िर होकर हाजत माँगे, मैं पूरी फरमा दूंगा के मुझ मे, तुम मे यही हाथ भर मिट्टी ही तो आड़ है और जिस वली को इतनी मिट्टी अपने चहाने वालो से हेजाब (पर्दे) मे कर दे वह वली काहे का ?!

مَنْ كَانَتْ لَهُ حَاجَةٌ فَلْيَأْتِ إِلَى قَبْرِيْ وَيَطْلُبُ حَاجَتَهُ أَقْضِهَا لَهُ فَإِنَّ مَا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ غَيْرُ ذِرَاعٍ مِنْ تُرَابٍ وَكُلُّ رَجُلٍ يَحْجُبُهُ عَنْ أَصْحَابِهِ ذِرَاعٌ مِنْ تُرَابٍ فَلَيْسَ بِرَجُلٍ

इसी तरह हज़रत **सैय्यदी मुहम्मद बिन अहमद फरगुल**, रदीअल्लाहो तआला अन्हो के हालाते शरीफा मे लिखा हैं - - -

फरमाया करते थे मैं उन मे हूँ जो अपनी कब्र मे तसर्रूफ (मदद) फरमाते है जिसे कोई हाजत हो मेरे पास (मेरे) चेहरहे मुबारक के सामने हाज़िर हो कर मुझ से अपनी हाजत कहे, मैं पूरी फरमा दूँगा

كَانَ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ يَقُوْلُ أَنَا مِنَ الْمُتَصَرِّفِيْنَ فِيْ قُبُوْرِهِمْ فَمَنْ كَانَتْ لَهُ حَاجَةٌ فَلْيَأْتِ إِلَى قُبَالَةِ وَجْهِيْ وَيَذْكُرُهَا لِيْ أَقْضِهَا لَهُ

उसी मे है - - - - - -

रिवायत है कि एक बार हज़रत **सैय्यदी मदायेन बिन अहमद अशमूनी**, रदीअल्लाहो तआला अन्हो, ने वज़ू फरमाते में एक खड़ाओ बिलादे मशरिक (पुर्व दिशा के शहरो) की तरफ फेंकी, साल भर के बाद एक शख्स

हाजिर हुए और वह खड़ाओ उन के पास थी, उन्हों ने हाल अर्ज़ किया -- के जंगल मे एक बदमाश ने उन की साहबज़ादी (लड़की) की इज़्ज़त पर हाथ डालना चाहा, लड़की को उस वक्त अपने बाप के पीरो मुरशिद हज़रत सैय्यदी मदायेन, का नाम मालूम न था यूँ निदा की (यूँ पुकारा)– يَا شَيْخَ اَبِيْ لَا تُخْطِنِيْ ! **या शेख अबील अहज़िनी,** अए मेरे बाप के पीर मुझे बचाइये-यह निदा करते ही वह खड़ाओ आई, (और) लड़की ने निजात पाई। वह खड़ाओ उन की औलादो मे अब तक मौजूद है।

उसी मे सैय्यदी **मूसा अबू ईमरान** रहमतुल्लाह तआला अलैह के ज़िक्र मे लिखते है - - -

जब उन का मुरीद जहाँ कही से निदा (पुकारा) करता, जवाब देते अगरचा साल भर की राह पर होता या उस से भी ज़्यादा।

كَانَ اِذَا نَادَاهُ مُرِيْدُهٗ اَجَابَهٗ
مِنْ مَسِيْرَةِ سَنَةٍ اَوْ اَكْثَرَ

हज़रत शेख मोहककिक मौलाना **अब्दुल हक** मुहद्दिस दहलवी, "अखबारूल अख्यार" शरीफ मे शेख हज़रत सैय्यदे अजल **शेख बहाऊल हक वद्दीन बिन इब्राहीम** व **अता उल्लाहुल अन्सारी कादरी शतारी हुसैनी** रदीअल्लाहो तआला अन्हो, के ज़िक्रे मुबारक मे हज़रते म्मदूह (यानी इन्ही हज़रत शेख बहाउलहक वद्दीन बिन इब्राहीम अताउल्लाह-) के रिसाल-ए-मुबारका "शत्तारिया" से नक्ल फरमाते है - -

कश्फे अरवाह (यानी नेक रूहो से मुलाकात करने के लिये) **या अहमद, या मुहम्मद,** के ज़िक्र का दो तरीका है, एक तरीका यह है कि, - - - **या अहमद,** दाऐं तरफ कहे और **या मुहम्मद,** बाऐं तरफ और दिल में **या रसूल अल्लाह,** की ज़र्ब लगायें।

दूसरा तरीका यह है के **या अहमद** दाऐं तरफ कहे और या

ذکر کشف ارواح یا محمد یا احمد
درو دو طریق ست، یک طریق آنست
یا احمد را در راست بگوید و یا محمد را در چپ
بگوید و در دل ضرب کند یا رسول اللہ، اما
طریق دوم آنست کہ یا احمد را در راست
گوید و چپ یا محمد و در دل وہم کند
یا مصطفیٰ۔ دیگر ذکر یا احمد یا محمد یا علی
یا حسن یا حسین یا فاطمہ شش طرفی ذکر
کند کشف جمیع ارواح شود و دیگر اسمائے
ملائکہ مقرب ہمیں تاثیر دارند یا جبرئیل،

मुहम्मद बाऐं तरफ कहे और दिल मे **या मुस्तफा** कहे,

दूसरा ज़िक्र यह है कि **या अहमद, या मुहम्मद, या अली, या हसन, या हुसैन, या फातमा,** का ज़िक्र छे (६) जानिब करे - तमाम रूहो से मुलाकात हो जाएगी ।

दूसरे मुकर्रब फरिश्तो के नाम भी तासिर रखते है **या जिब्रील, या मिकाईल, या इसराफील, या ईज़राईल,** की चार ज़र्ब लगाये, । ज़िक्रे शेख भी करे **या शेख, या शेख,** इस तरह अदा करे के हुर्फे निदा दिल से खीचें (यानी शब्द, या, दिल से पुकारे) शेख के दोनो लफ्ज़ की दिल मे ज़र्ब लगाए।

یا میکائیل یا اسرافیل یا عزرائیل چہار ضربی ، دیگر ذکر اسم شیخ یعنی بگوید - یا شیخ یا شیخ ہزار بار بگوید کہ حرف ندا را از دل بکشد طرف راست و بر دو لفظ شیخ را در دل ضرب کند "

———————

— — — — — — — — — — —

— — — — — — — — — — —

— — — — — — — — — — —

— — — — — — — — — — —

— — — — — — — — — —

— — — — — — — — — —

— — — — — — — — — —

— — — — — — — — — —

— — — — — — — — — —

— — — — — — — — — —

— — — —

.हज़रत सैय्यदी **नूरूद्दीन** अब्दुल रहमान जामी, कुद्देसा सिर्रहुस्सामी, "नफ़हातुल उन्स" शरीफ में हज़रत **मौलवी मअनवी** कुद्देसा सिर्रहुलअली, के हालात में लिखते है के मौलाना रूहुल्लाह रूह (यानी हज़रत मौलवी मअनवी) ने करीबे इन्तेकाल इरशाद फरमाया - - -

मेरी वफात (मौत) से गमगीन न होना क्यो कि "नूर मन्सूर" रहमतुल्लाह तआला अलैह, ने एक सौ पचास (१५०) साल के बाद शेख फरीदुद्दीन अत्तार "रहमतुल्लाह तआला अलैह, के रूह पर तजल्ली (रौशनी) फरमाया ।

"از رفتنِ من غمناک مشوید کہ نور منصور رحمۃ اللہ تعالےٰ بعد از صد و پنجاہ سال بر روح شیخ فریدالدین عطار رحمۃ اللہ تعالےٰ تجلی کردہ مرشد او شد "

और फरमाया - - -

के तुम हर हालत मे मुझे पुकारो ताके मैं तुम्हारे लिये जिस लिबास मे हूँ हाज़िर हो जाऊ।

خود بر حلیے کہ باشید مرا یاد کنید تا من شمارا مُمِد باشم در ہر لباسے کہ باشم۔

और यह भी फरमाया के - - -

— — — — — — — —

हमारा आलम (दुनिया) मे दो तरह का तअल्लुक है, एक बदन के साथ और एक तुम्हारे साथ और जब ब ईनायते हक सुबहानहु व तआला मुजरिम होंगा और आलमें तफरिद व तजरीद मे जलवाहगिरी होगी वह तअल्लुक भी तुम से होगा।

در عالم مارا دو تعلق ست یکے بہ بدن بشمار و چوں بہ عنایت حق سبحانہٗ و تعالےٰ فرد و مجرد شوم و عالم تجرید و تفرید روئے نماید آں تعلق نیز از آں شما خواہد بود"

शाह वाली अल्लाह साहब, दहलवी, — — — — — —
-(अतैय्यबुल नगम फी मदहे सैय्यहुल अरबोवल अजम) में लिखते है - -

وَصَلّٰی عَلَیْکَ اللّٰہُ یَا خَیْرَ خَلْقِہٖ
وَیَا خَیْرَ مَأْمُوْلٍ وَّیَا خَیْرَ وَاهِبٖ

وَیَا خَیْرَ مَنْ یُّرْجٰی لِکَشْفِ رَزِیَّۃٍ
وَمَنْ جُوْدُہٗ قَدْ فَاقَ جُوْدَ السَّحَائِبِ

وَاَنْتَ مُجِیْرِیْ مِنْ هُجُوْمِ مُلِمَّۃٍ
اِذَا اَنْشَبَتْ فِی الْقَلْبِ شَرَّ الْمَخَالِبِ

और खुद उस की शरहे (Explanation) और तरजमा मे कहते है - -

ऑहज़रत सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, की बारगाहे आली मे गिड़गिड़ा कर दुआ करता हुँ, के अए मखलूके खुदा सब से अफज़ल व बेहतर, तुझ पर रहमते खुदावन्दी नाज़िल हो-अए अफज़ल व अकमल, जो शख्स तुझ से किसी चीज़ की उम्मीद रखता है तो, तू अता करता है - अए मखलूक मे सब से आला व बाला, जो शख्स तुझ से मुसीबतो

دفصل یازدہم در ابتہال بجناب آں حضرت صلے اللہ تعالےٰ علیہ وسلم رحمت فرستد بر تو خدائے تعالےٰ اے بہترین خلق خدا! واے بہترین کسیکہ امید داشتہ شود! اے بہترین عطا کنندہ واے بہترین کسیکہ امید داشتہ باشد برائے ازالۂ مصیبتے واے بہترین کسیکہ سخاوت او زیادت از باراں بار ہا گواہی میدہم

से निजात की उम्मीद रखता है तू उस की मुसीबतो को खत्म करता है - अए मखलूक मे सब से बरतर, जो शख्स के तुझ से सखावत की उम्मीद रखता है।

کہ تو پناہ دہندۂ منی از ہجوم کردن مصیبتے
وقتے کہ بخلانند در دل بدترین چنگال ہائے خود
— — — — — — —
— — — — — — —

तो सखावत के बादल गवाही देते है । तू मुसीबतों के हुजूम से निजात देना जिस वक्त के बद तरीन लोग दिल मे मुसीबतो के काटें चुभोते है।

इस (दुआ) के शुरू मे लिखते है - - -

कुछ ऐसे ज़माने के हादसात (मुसीबते) है के इस में हादसात (मुसीबतो, का होना) ज़रूरी है। हुज़ूरे अकदस, सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की रूह से मदद मॉगने से (वह) खत्म हो जाते है।

"در ذکر بعض حوادث زماں کہ دراں حوادث
لابد است از استمداد بروح آنحضرت صلی
اللہ تعالیٰ علیہ وسلم" ————
— — — — — — — — — — —
— — — — —

इसी (किताब) की फसले अव्वल (The First Chapter) में लिखते है

بہ نظرے آید مرا مگر آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ
علیہ وسلم کہ جائے دست زدن اندوہگین است در ہر شدتے

यही शाह (वली अल्लाह) साहब "मदहय्य हमज़य्य" मे लिखते है

يُنَادِيْ ضَارِعًا بِخُضُوْعِ قَلْبٍ
وَذُلٍّ وَابْتِهَالٍ وَالْتِجَاءِ
رَسُوْلَ اللّٰهِ يَا خَيْرَ الْبَرَايَا
نَوَالَكَ أَبْتَغِيْ يَوْمَ الْقَضَاءِ
إِذَا مَا حَلَّ خَطْبٌ مُدْلَهِمٌّ
فَأَنْتَ الْحِصْنُ مِنْ كُلِّ الْبَلَاءِ
إِلَيْكَ تَوَجُّهِيْ وَبِكَ اسْتِنَادِيْ
وَفِيْكَ مَطَامِعِيْ وَبِكَ ارْتِجَائِيْ

और खूद ही इस की शरह (Explanation) और तरजमा मे कहते है

रो, रो कर इन्केसारी, इलतेजा व इख्लास, और खुशू व खुसू (यानी दिल की गैहराई) से

"فصل ششم، در مخاطبہ جناب عالی علیہ
علیہ افضل الصلوات واکمل التحیات و
التسلیمات بنا رکند زار وخوار شدہ شکستہ

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, को पुकारे के अए रसूले खुदा अए बहेतरीन मख्लूकात हम क़ियामत के दिन तेरी अता चाहते है । जिस वक्त मुशकिलात बलायें घेरे हो। तेरी पनाह मे रहूँ।

मैं तेरी पनाह चाहता हूँ और तुझी से उम्मीदे वाबस्ता रखता हूँ।

دل واظہار بے قدری خود وبہ اخلاص در مناجات وبہ پناہ گرفتن بایں طریق کہ اے رسول خدا اے بہترین مخلوقات عطائے مے خواہم روز فیصل کردن وقتے کہ فرود آید کار عظیم در غایت تاریکی پس توئی پناہ از ہر بلا بسوئے تست روآوردن من وبہ تست پناہ گرفتن من ودر تست امید داشتن من اھ ملخصًا

यही शाह (वली अल्लाह) साहब, "इनतेबाह फी-सलासिले औलिया अल्लाह" में हाजत के वक्त मदद माँगने के लिये एक वज़ीफा की तरकीब यूँ नक्ल करते हैं - - -

पहले दो रकअत नफिल अदा करें उस के बाद एक सौ ग्यारह (१११) बार दरूद शरीफ पढ़े उस के बाद एक सौ ग्यारह (१११) बार कल्मा-ए-तमजीद और एक सौ ग्यारह (१११) बार **"शयअन लिल्लाहे या शेख अब्दुल कादिर जीलानी"**, (अल्लाह के वासते मेरी मदद करो अए शेख अब्दुल कादिर जीलानी)

"اول دو رکعت نفل بعد ازاں یکصد و یازدہ بار درود بعد ازاں یکصد و یازدہ بار کلمۂ تمجید و یکصد و یازدہ بار شَیْئًا لِلّٰہِ یَا شَیْخ عَبْدَ الْقَادِرِ جِیْلَانِی" ——

— — — — — — —

— — — — — —

— —

इसी "इनतेबाह" से साबित के यही शाह साहब और उन के शेख व इल्मे हदीस के उस्ताद, मौलाना **अबू ताहिर मदनी,** जिन की खिदमत मे मुद्दतो रह कर शाह साहब ने हदीस पढ़ी और उन के उस्ताद व शेख और वालिद मौलाना **इब्राहीम करवी,** और उन के उस्ताद **मौलाना कशाशी** और उन के उस्ताद मौलाना **अहमद शनावी**, और शाह साहब के उस्तादो के उस्ताद मौलाना **अहमद नखली,** के यह चारो (४) हज़रात शाह साहब के हदीस के सिलसिलो के रावी है। और शाह साहब के पीरो मुरशिद **शेख मुहम्मद सईद लाहोरी** जिन्हें (शाह साहब ने) "इनतेबाह" मे शेखे मुअत्तेबर (भरोसे के काबिल) सच्चा कहा और सरदारे मशाएखे तरीकत से

गिना, और उन के पीर शेख हज़रत **मुहम्मद अशरफ लाहोरी** और उन के शेख मौलाना **अब्दुल मलिक**, और उन के मुरशिद शेख **बा यज़ीद सानी**, और शेख शनावी के पीर हज़रत **सैय्यद सबगतुल्लाह बरूजी**, और उन दोनो साहबो के पीरो मुरशिद मौलाना **वज्यहुद्दीन ऊलवी**, "शारहे हिदाया व शरहे विकाया" और उन के शेख हज़रत **शाह मुहम्मद गौस गवालयारी**, अलैहिम रहमतुल बारी, यह सब अकाबिर (बुज़ुर्ग) **नादे अली**[1] की सनदें (सुबूत) लेते और अपने शागिरदो और मुंहब्बत करने वालो को इजाज़ते देते और **या अली, या अली**, का वजीफा करते।

जिसे इस की तफसील देखनी हो वह फकीर के रसाइल (किताबे) انہار الانوار (अनहारूल अनवार) और حیاۃ الموات فی بیان سماع الاموات (हयातुल मुवात फी बयाने समाईल अम्वात) को पढे।

शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब ने "बुस्तानुल मुहद्देसीन" मे हज़रत अरफअ व आला इमामुल उलमा, निज़ामुल औलिया हज़रत सैय्यदी **अहमद ज़रूक मगरबी** कुद्देसा सिर्रहु, उस्ताज़ इमाम शमसुद्दीन लिकानी और इमाम शहाबुद्दीन कुस्तलानी, शारहे हदीस "सही बुखारी" की बहुत बड़ चड़ कर खूब खूब तारीफे लिखी के "वह जनाब सात (७) अबदालो व मोहक्केकिने सूफिया मे से है। शरीअत व हकीकत के जामअे, बयान के मुताबिक उन की वह किताबे जो बातनी (छूपे हुए) इल्मो के बारे में है वह किताबे इल्में ज़ाहिरी मे भी फायेदा पौहचाने वाली और बहुत मुफीद है। यहाँ तक लिखा

"بالجملہ مردے جلیل القدرست کہ تقریر کمال او فوق الذکر است"

(यानी सारी बातो का हासिल यह है कि वह ऐसे बड़े मरतबे वाली शख्सीयत है के उन का मरतबा व कमाल बयान से बहुत उँचा है।)

फिर इस जनाबे जलालत मआब (यानी सैय्यदी अहमद ज़रूक मग़रबी) के कलामे पाक से दो शेर नक्ल किये के फरमाते है - - -

أَنَا لِمُرِيدِي جَامِعٌ لِشَتَاتِهِ
إِذَا مَا سَطَا جَوْرُ الزَّمَانِ بِنَكْبَةِ

यानी मैं अपने मुरीद की परेशानियो मे इत्मीनान बख्शने वाला हूँ जब ज़माने के सितम अपनी नहुसत उस पर डाले।

[1] "नादे अली" एक वजीफा है जिसकी रिवायतो में बेशुमार फजीलते और फायदे आए है । "नादे अली" यह है

[illegible]

وَإِنْ كُنْتَ فِي ضِيقٍ وَكَرْبٍ وَوَحْشَةٍ
فَنَادِ بِيَا زَرُّوقُ آتِ بِسُرْعَةٍ ○
— — — — — — — — —

— — —

और अगर तू तंगी व तकलीफ व वहैशत (ड़र) मे हो तो यूँ पुकार **"या ज़रूक"** मैं फौरन मदद के लिये आऊँगा !

अल्लामा ज़ियादी, फिर **अल्लामा अजहूरी,** जो बहुत सारी किताबो के लेखक है जो मशहूर है। फिर **अल्लामा दाऊदी मैहशी** "शरहे नहेज" फिर **अल्लामा शामी** साहिबे (लेखक)"रददुल मोहतार हाशिया दुर्रे मुख्तार," गुम शुदा चीज़ मिलने के लिये फरमाते है कि - - -

"बुलंदी पर जा कर हज़रत सैय्यदी **अहमद बिन अलवान यमनी,** कुद्देसा सिर्रहु, के लिये फातेहा पढ़े फिर उन्हे निदा करे (पुकारे) **या सैय्यदी अहम्मद या इब्ने अलवान"**

मशहूर किताब "शामी" से फकीर ने उस के हाशिये की इबारत अपने रिसाले (किताब) "हयातुल मुवात ----" के हाशियो के खत्म होने पर ज़िक्र की ।

गर्ज़ यह सहाबा-ए-किराम से इस वक्त तक के इस कदर अइम्मा व औलिया, व उलमा है जिन के अकवाल (बातें, Sayings) फकीर ने एक छोटे से वक्त मे जमा किये।

अब मुशरिक कहने वालो से साफ पूछा जाए के **ऊसमान बिन हुनैफ** व **अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन ऊमर,** सहाबा-ए-किराम, रदीअल्लाहो अन्हम से ले कर **शाह वली अल्लाह,** व **शाह अब्दुल अज़ीज़** साहब और उन के उस्तादो व मशाएख तक सब को काफिर मुशरिक कहते हो या नही। अगर इन्कार करे तो अलहम्दुलिल्लाह हिदायत पाई और हक वाज़ेह (ज़ाहिर) हो गया।

और बे धड़क उन सब पर कुफ्र का फतवा जारी करे तो उन से इतना कहिये के अल्लाह तुम्हें हिदायत करे ज़रा आँखे खोल कर देखो तो किसे कहा और क्या कुछ कहा। —— إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ——

और दिल मे जान लीजिये के जिस मज़हब की बिना पर सहाबा से लेकर अब तक के अकाबिर (बुज़ुरगाने दीन) सब मआज़ अल्लाह मुशरिक व

काफिर ठैहरे, वह मज़हब खुदा और रसूल को किस कदर दुश्मन होंगा।

सही हदीसो मे आया के जो किसी मुसलमान को काफिर कहे वह खूद काफिर है और बहुत से अइम्मा-ए-दीन (इमामो) ने मुतलकन इस पर फतवा दिया (यानी साफ काफिर कहा) जिस की तफसील फकीर ने अपने रिसाले (किताब) اَلنَّہْیُ الْاَکِیْدُ عَنِ الصَّلٰوۃِ وِرَاءَ عِدَی التَّقْلِیْد (अन्नहियुल अकीद अनिस सलाते वरा-ए-अदित्तकलीद) मे ज़िक्र की, हम अगरचे अहतियात के तौर पर काफिर न कहेगे। लेकिन इस मे शक नही के अइम्मा (इमामो) की एक जमाअत के नज़दीक यह हज़रात के **या रसूल अल्लाह, व या अली, व या हुसैन, व या गौसुल्ल सकलैन,** कहने वाले मुसलमानो को काफिर व मुशरिक कहते है, खूद काफिर है तो उन पर ज़रूरी के नये सिरे से कल्मा-ए-इस्लाम पढ़े और अपनी औरतो से नया निकाह करें।

"दुर्रे मुखतार" में है - - -

مَا فِیْہِ خِلَافٌ یُؤْمَرُ بِالْاِسْتِغْفَارِ وَالتَّوْبَۃِ وَتَجْدِیْدِ النِّکَاحِ

जिस मे इख्तेलाफ हो उस मे असतगफार, तोबा, और नये निकाह का हुक्म दिया जाता है।

फायेदा :- हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, को निदा (पुकारने) के उम्दह (बहेतरीन) दलीलो से اَلتَّحِیَّات "अत्तहियात" है जिसे हर नमाज़ी, नमाज़ की दो रक्अत पर पढ़ता है और अपने नबी-ए-करीम अफज़लुस्सलातो व तसलीम से अर्ज़ करता है - - - -

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ اَیُّہَا النَّبِیُّ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ

(अस सलामो अलैका अय्योहन नबीय्यो व रहमतुल्लाहे व बरकातोहु)

तरजमा :- सलाम हुज़ूर पर अए नबी और अल्लाह की रहमत और उस की बरकते !

अगर निदा (पुकारना) मआज़ अल्लाह, शिर्क है तो यह अजीब शिर्क है के खास नमाज़ मे शरीक व दाखिल है।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم

और यह जाहिलाना ख्याल सिर्फ झूटा के अत्तहियात ज़मान -ए-अकदस (हुज़ूर के ज़माने) से वैसी ही चली आती है तो मकसद इन लफज़ो की अदा

है न नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की निदा,

हरगिज़ नहीं शरीअते मुताहेराह ने नमाज़ मे कोई ज़िक्र ऐसा नहीं रखा है जिस मे सिर्फ ज़बान से लफ्ज़ निकाले जाऐं और मअनी मुराद न हो, नहीं, नहीं बल्कि यकीनन यही दरकार है ।

—————— اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ ——————

(अत्तहियातो लिल्लाहे वससलावतो - वत तय्यबातो - -) से अल्लाह की हम्द का इरादा रखे और اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ (अस सलामो अलैका अय्योहन नबीय्यो व रहमतुल्लाहे व बरकातहु) से यह इरादा करे के इस वक्त मैं अपने नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम को सलाम करता (हूँ) और हुज़ूर से इरादे के साथ अर्ज़ कर रहा हूँ ।

"सलाम हुज़ूर पर अए नबी और अल्लाह की रहमत और उस की बरकते"। [1]

"फतावा आलमगीरी" मे "शरहे कदवरी" से है - -

"अलफाजे —— तशहहुद (अत्तहियात) के माइनो का दिल मे इरादा ज़रूरी है जैसा के अल्लाह तआला, नबी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम व ज़ाते अकदस और औलिया अल्लाह पर सलामती व सलाम नाज़िल फरमाता है"।

لَا بُدَّ اَنْ يَّقْصِدَ بِاَلْفَاظِ التَّشَهُّدِ مَعَانِيَهَا الَّتِیْ وُضِعَتْ لَهَا مِنْ عِنْدِهٖ كَاَنَّهٗ يُحَيِّی اللّٰهُ تَعَالٰی وَيُسَلِّمُ عَلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰی نَفْسِهٖ وَعَلٰی اَوْلِيَآءِ اللّٰهِ تَعَالٰی ——

"तनवीरूल अबसार" और उस की शरहे "दुर्रे मुख्तार" में है

(अल्फाज़े अत्तहियात से उस के मअनी ही मुराद लें जैसा की अल्लाह तआला अपने नबी व औलिया पर सलामती व सलाम नाज़िल फरमाता है । इसी तरह वो खूद अपने पैग़म्बर को सलाम

(وَيَقْصِدُ بِاَلْفَاظِ التَّشَهُّدِ) مَعَانِيَهَا مُرَادَةً لَّهٗ عَلٰی وَجْهِ (الْاِنْشَاءِ) كَاَنَّهٗ يُحَيِّی اللّٰهَ تَعَالٰی وَيُسَلِّمُ عَلٰی نَبِيِّهٖ وَعَلٰی نَفْسِهٖ

[1] हजरत इमाम गजाली रदीअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते है - - -

"जब अत्तहियात पढ़ने बैठो तो अपने दिल मे रसूलुल्लाह, सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, की मुबारक सूरत का ख्याल करे और हुज़ूर का ख्याल दिल में जमा कर कहे "अस सलामो अलैका अय्योहन नबीय्यो व रहमतुल्लाहे व बरकातेहु" और यकीन जाने के यह सलाम हुज़ूर तक पौहोच रहा है और हुज़ूर जवाब इससे बड कर दे रहे है।" (इहयाऊल उलूम, जिल्द १ सफा न १०७) । फारूक ।

وَاَوْ لِیَآءِہٖ (لَا الْاَخْبَار) عَنْ ذٰلِکَ ذَکَرَہٗ فِیْ الْمُجْتَبٰی ——

कर रहा है और मुसलमान और औलिया किराम को भी, यह ख्याल रखे। इसी का "मुजतबा में जिक्र है)।

अल्लामा हसन शर्नबलानी, "मुराकियुल फलाह शरहे नूरूल अय्जाह" मे फरमाते है ----

يَقْصُدُ مَعَانِيَهُ مُرَادَةً لَهُ عَلَى أَنَّهُ يُنْشِئُهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا مِنْهُ ——

"(इसी मअनी मुराद का इस तरह इरादा करे के जाते नबी पर सलाभती व सलाम का इन्शा(निबन्ध, Composition) हो)"।

इसी तरह बहुत से उलमा ने वजाहत (Explanation) की, इस पर कुछ बेवकूफ इन्कार करते है और यह बहाना गड़ते है (कि) - - -

सलातो व सलाम पौहचाने पर फरिशते मुकर्रर है तो इन में निदा (पुकारना) जाइज, और उन के सिवा मे ना जाइज़, और हॉलाकि ये सक्त जहालत बे मजा है । इसके अलावा बहुत एतराजों से जो इसपर आते है। इन होशमंदो ने इतना भी न देखा के सिर्फ दरूद व सलाम ही नहीं बल्कि उम्मत के तमाम काम व आमाल रोजाना दो वक्त सरकारे अर्शे विकार हुजूर सैय्यदुल अबरार सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम मे अर्ज़ किये जाते है। बहुत सारी हदीसो में इसका खुला बयान है कि सब छोटे, बडे आमाल अच्छे और बुरे सब हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, की बारगाह में पेश होते है और यूँ है तमाम अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातो वस सलाम और वालदैन (मॉ, बाप) व अजीजो व अहबाब सब को आमाल बताये जाते है फकीर ने अपने रिसाले (किताब) —— سلطنت المصطفیٰ فی ملکوت کل الوریٰ ——

(सलतनतुल मुस्तफा फी मलकुते कुल्लुलवरा) मे वह सब हदीसे जमा कि थी।

यहाँ इसी कदर बस है कि, इमामे अजल **अब्दुल्लाह बिन मुबारक** रहमतुल्लाह अलैह, हजरत **सईद बिन मुसैय्यब,** रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि - - -

لَيْسَ مِنْ يَوْمٍ إِلَّا وَتُعْرَضُ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَعْمَالُ أُمَّتِهِ غُدْوَةً

यानी कोई दिन ऐसा नही जिस में सैय्यदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम पर उम्मत के आमाल

हर सुबह व शाम पेश न किये जाते हो, तो हुज़ूर का अपने उम्मतियो को पैहचानना उन की अलामत और उन के आमाल दोनो वजह से है।

وَقَتِيْنَانَيْعِرِفُهُمْ بِسِيْمَاهُمْ وَاَعْمَالِهِمْ

— — — — — — — —

صلى الله تعالى عليه وسلم وعلى آله وصحبه وشرف وكرم —

फकीर अल्लाह अज़्ज़ व जल की तौफिक से इस मस्अले में एक बड़ी और मोटी किताब लिख सकता है मगर इंसाफ पसंद के लिए इसी कदर काफी और खुदा हिदायत दे तो एक हुर्फ (शब्द) काफी -

अए काफी हम को गुमराहो की शरारत से बचा-दरूद नाज़िल हो हमारे आका मुहम्मद शाफी सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम, उन की आल और उनके दीने साफी के हिमायती असहाब पर - आमीन

सब खुबिया अल्लाह को जो मालिक सारे जहान वालो का।

اَلْفِتَنَاشَرِّالْمُضِلِّيْنَ

يَاكَافِيْ وَصَلَّى اللّٰهُ سَيِّدِنَا —

وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدِنِ الشَّافِيْ —

وَاٰلِهٖ وَصَحَابَةِ الدِّيْنِ الصَّافِيْ -

—— اٰمِيْن ——

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

चन्द और बातें

अज़ :- मुहम्मद फारूक खाँ अशरफी रिज़वी,

हुज़ूर सैय्यदी आला हज़रत **इमाम अहमद रज़ा खाँ** रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने ज़ेरे नज़र किताब **"निदा-ए-या रसूल अल्लाह"** में अहादीसे मुबारका, व मोअतेबर किताबों से, बुज़ुर्गों को मुसीबत के वक्त पुकारने के मस्अले को रौशन कर दिया। और यकीनन यही सही मज़हब व मसलके **इमामे आज़म अबू हनीफा** रदीअल्लाहो तआला अन्हो है।

अब जो लोग मुसलमान व हनफी होने का दावा करते है उन्हें चाहिये के वो **"या रसूल अल्लाह, या अली, या गौस** वगैरा कहने को हक व जाइज़ समझे और जो इसे शिर्क या बिदअत बताये उन पर लानत भेजें।

यहाँ हम चंद हदीसे और चंद ऐसे बुज़ुर्गों के कौल नक्ल कर रहे है जिन्हें मानने का दावा वहाबी, देवबन्दी, मौदूदी वगैरा फिरके के लोग भी करते है। हज़रत शेख **अल्लामा अहमद बिन ज़ैनी** व हल्लान शाफअई रहमतुल्लाह तआला अलैह अपनी किताब, الدرر السنية في الرد على الوهابية (अद्दुरारूस्सन्नीया फीर्रद्दे अलल वहाबीया) में फरमाते है - -

"वसीले की एक दलील रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम की फूफी **हज़रत सफिया** रदीअल्लाहो तआला अन्हा का वह मरसीया है जिसे उन्होंने आप के इंतेकाल के बाद कहा उस का एक शेर यह है - -

الا يا رسول الله انت رجاؤنا — وكنت بنا برا ولم تك جافيا

या रसूल अल्लाह ! आप हमारी उम्मीद है - आप हमारे साथ नेकी करते थे बेरूखी नहीं बरत्ते थे ।

इस शेर में या रसूल अल्लाह कह कर निदा कि गई है और انت رجاؤنا (यानी आप हमारी उम्मीद है) भी कहा गया है। जिसे सहाबा-ए-किराम ने सुना मगर किसी ने नापसंद नही किया।"

("अद्दुरारूस्सन्नीया फीर्रद्दे अलल वहाबीया" - सफा नं ५२)

यही शेख अहमद बिन ज़ैनी अलैहरहमा, उसी किताब मे नक्ल फरमाते है ---

"सही हदीसो में है के जब सहाबा-ए-किराम रिदवानुल्लाहे अलैहीम अजमाईन, ने (झुटे नुबुवत के दावेदार) मुसीलेमा कज़्ज़ाब से जिहाद (जंग)

किया तो उनकी जबान पर يا محمداه يا محمداه (या मुहम्मदाह, या मुहम्मदाह) का नारा था।

("अद्दुरारूस्सन्नीया फीर्रद्दे अलल वहाबीया" - सफा नं ६१)

उसी किताब में है ----

हज़रत शेख जैनुद्दीन मुराग़ी अलैहरहमा फरमाते है - -

" صلى الله عليك يا محمد (सल्लल्लाहो अलैका या मुहम्मद) कहने के बजाये صلى الله عليك يا رسول الله (सल्लल्लाहो अलैका या रसूल अल्लाह) कहना ज़्यादा बेहतर है"।

("अद्दुरारूस्सन्नीया फीर्रद्दे अलल वहाबीया" - सफा नं ४७)

यही शेख अहमद बिन ज़ैनी, उसी किताब में फरमाते है -

"रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो तआला अलैह व सल्लम से सही रिवायत है -- आप ने फरमाया कि जो शख्स मदद चाहता हो वो कहे يا عباد الله! اعينوني (وفي رواية اغيثوني) अए खुदा के (नेक) बन्दों मेरी मदद करो।"

("अद्दुरारूस्सन्नीया फीर्रद्दे अलल वहाबीया" - सफा नं ३४)

हज़रत शाह वली अल्लाह मुहद्दीस दहलवी साहब अलैह रहमा अपनी किताब में फरमाते है।

"मैंने अर्ज़ की (कहा) या रसूलअल्लाह, अल्लाह तआला की अता से हमें भी अता फरमाईये - आप रहमतुल लिलआलमीन है और हम खैरात लेने के लिए हाज़िर हुऐ है - - और आप ने मेरी जल्द अज़ीम मदद फरमाई है, और मुझे बताया के मैं आइन्दा अपनी हाजात (ज़रूरतो) में कैसे मदद तलब करूँ"

(फ़ुयूज़ुल हरमैन, सफा नं २९)

मौलवी अशरफअली थानवी, अपनी किताबं "शमीमुल तईब तरजमा शैमुल हबीब" में यह शेर लिखते है - -

दस्तगीरी[1] कीजिए मेरे नबी ⟷ कशमकश मे हूं तुम ही मेरे वली
जुज़[2] तुम्हारे है कहाँ मेरी पनाह ⟷ फौजे कुलफ्त[3] मुझपे आ गालिब[4] हुई
इब्ने अब्दुल्लाह जमाना है खिलाफ
अए मेरे मौला खबर लीजिए मेरी

अल्लाह तआला समझने की तौफीक अता फरमाये - आमीन

[1] मदद [2] बगैर तुम्हारे [3] मुसीबत की फौज [4] फतेहयाब